Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B.A. Part — II (Hons)
Paper — III
नीतिशास्त्र (Ethics)

1. "नीतिशास्त्र का स्वरूप"

नीतिशास्त्र वह विज्ञान है, जिसमें मनुष्य के नैतिक कर्मों एवं आचरण के औचित्य की मीमांसा होती है। जिससे मनुष्य का कर्तव्य निश्चित और उसके कर्मों के औचित्य-अनौचित्य का ठीक-ठीक निर्णय किया जा सके।

मनुष्य का कर्म कैसा होना चाहिए और क्या करना चाहिए इत्यादि से इसका सम्बन्ध है। क्या है, क्या नहीं है, इससे इसका कोई मतलब नहीं है। अर्थात् आचार-शास्त्र का सम्बन्ध 'चाहिए' से है। आचार शास्त्र में नैतिक चेतना के विषयों का अध्ययन किया जाता है, जैसे — उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ, धर्म-अधर्म आदि का विचार। अतः नैतिक चेतना से सम्बन्धित सभी बातें आचार शास्त्र के विषय हैं।

नीतिशास्त्र में अनेक विषयों पर विचार-विमर्श किया जाता है:—

1. नैतिक गुणों के अर्थ का स्पष्टीकरण — आचार शास्त्र का मुख्यतः उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ, पाप-पुण्य आदि नैतिक गुणों से सम्बन्धित है। इन्हीं के द्वारा मानव आचरण का मूल्यांकन किया जाता है। अतः आचार-शास्त्र इनके वास्तविक अर्थ को जानने का प्रयास करता है।

2. नैतिक निर्णयों के स्वरूप, विषय, मान्यताएँ तथा नैतिक शक्ति का विचार — नीतिशास्त्र हमारे कर्मों का नैतिक निर्णय करता है अर्थात वह बतलाता है कि कौन-सा कर्म

जीवन में तथा जीव का अनुशीलन नैतिक निर्णय और वास्तविकता होने के कारण नैतिक निर्णय पर अवश्य आचार विचार, मान्यताएँ तथा नैतिक निर्णय करने की शक्ति का अध्ययन भी आचार शास्त्र के विषय हो जाते हैं।

3. नैतिक मानदण्ड का निर्धारण – नैतिक मापदण्ड का अध्ययन आचार शास्त्र की विशेष प्रमुख समस्या है क्योंकि नैतिक निर्णय इसके बिना सम्भव नहीं हो सकता। आचार शास्त्र उन मापदण्डों की स्थापना करता है जिनके आधार पर मानव आचरणों का नैतिक निर्णय किया जा सके। अतः नैतिक निर्णय का स्वरूप वास्तविक आदर्श, परम लक्ष्य या सर्वोच्च शुभ आदि की समस्याएँ आचार शास्त्र के क्षेत्र के अन्तर्गत आ जाते हैं।

4. नैतिक पद्धति का विचार – नैतिक निर्णय करने के लिए किसी प्रणाली का अनुसरण करना आवश्यक है। अतः नैतिक निर्णय करने के लिए नैतिक पद्धति या प्रणाली का ज्ञान आवश्यक है।

5. कर्तव्य अधिकार और नैतिक बाध्यता का स्पष्टीकरण – कांट का कहना है कि उचित का कोई अर्थ नहीं है यदि उसका करना कर्तव्य नहीं समझा जाय

एक व्यक्ति का नैतिक दृष्टि से उचित
अधिकार को जाना है। तथा एक
व्यक्ति का अधिकार दूसरे व्यक्ति
[illegible] कर्तव्य, भावना
और अधिकार का विचार
आचार शास्त्र में किया जाता है।

6. सद्गुण और दुर्गुण का विचार भी आचार शास्त्र में होता है।

7. दण्ड और पुरस्कार के सिद्धान्तों का अध्ययन भी आचार शास्त्र में होता है। जिसके आधार पर हम कहते हैं कि उचित कर्म करने वाले को पुरस्कार तथा अनुचित कर्म करने वाले को दण्ड देना चाहिए।

8. नैतिक भावना का स्थान उचित या अनुचित कर्मों के साथ जो आनन्द और विषाद की अनुभूति होती है उसे ही नैतिक भावना कहा जाता है। इसलिए इनका नैतिक निर्णय में क्या स्थान है इसका विमर्श इसी शास्त्र में होता है।

9. विशेष कर्तव्यों तथा आचरण के विशेष नियमों का अध्ययन आचार शास्त्र का मुख्य उद्देश्य है।

10. कुछ मनोवैज्ञानिक दार्शनिक सामाजिक तथा राजनैतिक समस्याओं का विचार भी आचारशास्त्र में सम्मिलित है। फलतः आचारशास्त्र, मनोविज्ञान दर्शनशास्त्र समाज शास्त्र एवं राजनीति शास्त्र से घनिष्ठ सम्बन्ध

रहता है।

अतः इससे सिद्ध होता है कि आचार शास्त्र व्यक्ति को उसके जीवन के आचरण में सलाह देता है तथा उसके अन्तःकरण को प्रकाशित करता है जिससे वह अपने तथा अन्य मनुष्यों के कर्मों तथा इच्छाओं तथा विचारों का सही ढंग से मूल्यांकन कर सके।

नीतिशास्त्र को 'कला' नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि इसमें चरित्रोत्थान या आचरण सुधारने के व्यावहारिक साधन का रास्ता नहीं बताया जाता। कला का अर्थ है किसी व्यवहार में निपुणता (Skill in practic) एक कलाकार वही होता है, जो किसी व्यवहार में निपुण हो। जैसे एक चित्रकार को कलाकार कहा जाता है, क्योंकि वह चित्रकारी में निपुण होता है पर यह आवश्यक नहीं है कि एक आचार शास्त्र का ज्ञानी भी किसी आचार-नियम का पालन करता ही हो या सच्चरित्र ही हो। किसी कला का मूल्यांकन बाह्य प्रकरणों द्वारा होता है। किसी को निपुण चित्रकार उसके खींचे हुए चित्रों की परीक्षा करके ही कहा जाता है। पर किसी का नैतिक मूल्यांकन उसके बाह्य आचरण पर नहीं अपितु उसके चरित्र पर निर्भर है। धर्मी उसे कहा जाता है, जिसका सदा उचित आचरण हो।

इन विचारों के आधार

है कि आचारशास्त्र कला नहीं है। इसे आचरण कला नहीं कहा जा सकता है। वास्तव में विज्ञान और कला व्याघातक नहीं हैं। विज्ञान सिद्धान्तों का प्रतिपादन करता है, कला करने की विधि सिखाती है, इसका यह अर्थ नहीं है कि दोनों बिल्कुल भिन्न हैं। वास्तव में दोनों पूरक हैं। कला सिद्धान्तों की जानकारी पर ही निर्भर है और सिद्धांतों की जानकारी का व्यवहार पर असर पड़ता ही है। इसी प्रकार आचार के सिद्धांतों की जानकारी का मनुष्य के व्यवहार पर भी प्रभाव होता है। पर चूँकि आचारशास्त्र में आचरण के आदर्शों को प्राप्त करने के विशेष नियमों का अध्ययन नहीं होता इसलिए इसे कला नहीं विचारा जाता। इसमें आचरण के आदर्शों के स्वरूप की मीमांसा होती है, इसलिए इसे विज्ञान कहा जाता है।

विज्ञान मनुष्य को केवल ज्ञान देता है, कुछ करने की विद्या नहीं सिखाता।

विज्ञान किसी विषय का सुव्यवस्थित अध्ययन करता है।

विज्ञान में निरीक्षण, वर्गीकरण, कल्पना इत्यादि विधियों का प्रयोग किया जाता है।

विज्ञान द्वारा सामान्य (Universal) ज्ञान होता है, किसी वस्तु-विशेष का ज्ञान नहीं होता।

आचारशास्त्र में भी सभी

विशेषताएँ मिलती हैं। इसमें आचार-नियम अथवा जीवन के आदर्शों का ज्ञान होता है। इससे हम जानते हैं कि मनुष्य का परम धर्म क्या है और मनुष्य की नैतिक प्रकृति कैसी है, पर इन आदर्शों को कैसे प्राप्त करें, इसके नियम नहीं बताये जाते। यह कुछ करने को नहीं सिखलाता, केवल नैतिक नियमों का ज्ञान देता है।

नैतिक नियमों के विमर्श में निरीक्षण, कल्पना, वर्गीकरण इत्यादि सभी विधियों का प्रयोग किया जाता है। मनुष्य के वास्तविक आचरणों का निरीक्षण किया जाता है तथा इसके आधार पर मनुष्य के परम धर्म का विचार किया जाता है। इन सब विधियों के प्रयोग से ही कोई मत निश्चित किया जाता है।

यह हमें सामान्य (Universal) ज्ञान देता है। आचारशास्त्र में हम व्यक्तिगत आचरण या धर्म के विषय में विचार नहीं करते अपितु सामान्य मानव-जाति का विचार करते हैं। इसमें मानव-जाति के परम धर्म का अन्वेषण किया जाता है। ये आचार-नियम हमें हिन्दुस्तानी या अमेरिका-निवासी होने के नाते नहीं बताये जाते अपितु मनुष्य होने के नाते। इसलिए नीतिशास्त्र एक विज्ञान है।

मनुष्य एक आत्म-चेतन (Self-Conscious) प्राणी है। यही गुण

जो इसे प्राकृतिक घटकों से भिन्न कर देता है। दूसरे प्राणी में चेतना रह सकती है पर आत्म-चेतना का अभाव रहता है, इसीलिए उनके आचरण की प्रकृति भिन्न है। नैतिक निर्णय में आत्म-चेतना होती है इसलिए अन्य प्राकृतिक घटनाओं के यंत्रवत् नियमों की तरह इसके नियम नहीं हो सकते। इसलिए आचार-शास्त्र प्रकृति-विज्ञान नहीं कहा जा सकता है। यह आदर्श-निर्देशक (Normative or Axiological) विज्ञान कहलाता है।

काण्ट, हेगल आदि ने भी आचार शास्त्र को दर्शन की ही एक शाखा माना है। पर वास्तव में [illegible] नीतिशास्त्र और दर्शन में भेद है। दर्शन का विषय समस्त संसार है पर आचार शास्त्र संसार के केवल एक विभाग से सम्बन्धित है — मानव-आचरण से। दर्शन शास्त्र में कोई पूर्व-मान्यता नहीं होती है। आचार शास्त्र में कुछ मान्यताएँ (Postulates) होती हैं जैसे इच्छा-शक्ति की स्वतन्त्रता, मनुष्य की विवेक-शक्ति इत्यादि। दर्शनशास्त्र की पद्धति चिन्तनशील होती है, आचार शास्त्र की वैज्ञानिक। इसलिए आचार-शास्त्र को आचार दर्शन कहना उचित नहीं होगा, पर आचारशास्त्र का दर्शन से बहुत ही गहरा सम्बन्ध है। जीवन के आदर्शों की खोज में मनुष्य अपने अनुभवों तक ही नहीं बल्कि उससे परे भी चिन्तन करता है।

अन्धविश्वासों, रूढ़िवादिता, अंधविश्वास, तथा भ्रांत धारणाओं को दूर कर नीति सम्बन्धी यथार्थ मत प्रस्तुत करता है। प्रो. म्युरहेड (Prof. Muirhead) के शब्दों में "नीतिशास्त्र व्यक्ति को आडम्बरों से, आवश्यक व अनावश्यक की नैतिक तथा सामाजिक संस्थाओं की चेतना को उसके बहिष्कार द्वारा पृथक कर सम्पन्न करता है।"

आज के भौतिक युग में नीतिशास्त्र का महत्त्व और अधिक हो गया है। आज का संसार भौतिक सुखों की प्राप्ति में ही संलग्न है। मनुष्य अनैतिकता, कुण्ठा एवं बुराइयों से आक्रान्त है। ऐसी स्थिति में नैतिकता का सही ज्ञान देनेवाले नीतिशास्त्र की आवश्यकता अधिक बढ़ गई है। आज के वैज्ञानिक युग में सतत विकासशील मनुष्य पर नैतिकता का अंकुश लगाना अनिवार्य हो गया है।

परोक्ष रूप से नीतिशास्त्र हमारे व्यावहारिक जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करता है। धर्म, राजनीति, अर्थशास्त्र, विधान

शिक्षा [illegible] की महत्वपूर्ण [illegible] [illegible] में नीतिशास्त्र महत्वपूर्ण [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] में नीतिशास्त्र की [illegible] [illegible] अपनाना चाहिए [illegible] को [illegible] पर बहुत [illegible] होता है।

वैज्ञानिक [illegible] से मनुष्य के हाथों में [illegible] प्रदान कर रही है। यदि वह नीतिकता की [illegible] करता है तो विज्ञान मानव जाति का [illegible] न होकर संहारक बन सकता है। इस स्थिति में नीतिशास्त्र का अध्ययन काफी उपयोगी हो गया है।

~~कृषि शिक्षा और [illegible] पर आधारित [illegible]~~

इस तरह हम देखते हैं कि आचार शास्त्र हमारे जीवन के सभी पहलुओं से गहरा सम्बन्ध रखता है और फलतः मानवता के उत्थान में इसका बहुत बड़ा हाथ है। फाउलर का कहना है कि "आचार शास्त्र का अध्ययन मात्र मानव जिज्ञासा की सन्तुष्टि नहीं करता बल्कि यह मानव के लिए अत्यन्त लाभदायक निष्कर्ष प्रस्तुत करती है।

यही कारण है कि प्राचीन भारतीय ऋषियों की तरह गांधी जी ने बतलाया कि नीतिकता ही धर्म है (आचारः परमो धर्मः) नीतिकता से रहित होने पर धर्म अंधविश्वासों

का विकास हो जाता है। राजनीति को
आचार शास्त्र की नींव में डाली
जानी चाहिए। नैतिक नियमों
का पालन होना चाहिए। देश में
नियम बनने चाहिए जिससे मानव
का नैतिक उत्थान हो। इसी तरह
उत्पादन वितरण और सम्पत्ति
न्याय और समानता के आधार
पर होना चाहिए। हमारी शिक्षा
भी आचार शास्त्र पर आधारित
होनी चाहिए।

इस प्रकार हम देखते हैं
कि आचारशास्त्र के द्वारा ही मानव-जाति
का वास्तविक नैतिक उत्थान सम्भव है।